P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-7* ISSUE-6* February- 2020
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

महात्मा गाँधी का समाजवादी चिन्तन
Mahatma Gandhi's Socialist Thinking

सारांश (Abstract)

भारतीय राजनीति में 1920 ई. के लगभग गाँधी युग का प्रारंभ होता है। हिन्दुस्तान के राजनीतिक क्षितिज में 'महात्मा गाँधी की जय' की आवाज बुलन्द हो रही थी। राष्ट्रीय आन्दोलन एक नया रूप धारण कर रहा था एवं उसकी नयी नीति निर्माण हो रही थी। गाँधी भारतीय राजनीति में बराबर प्रभावशाली होते गये एवं उन्होंने उसका सक्षम नेतृत्व किया।[1] डॉ. कौशिक का विचार है कि गाँधी युग में एक नए प्रकार की राष्ट्रीय भावना का उदय हुआ।[2]

The Indian era begins around 1920 AD in Indian politics. The voice of 'Mahatma Gandhi Ki Jai' was getting louder in the political horizon of India. The national movement was taking a new form and its new policy was being formulated. Gandhi became equally influential in Indian politics and he was able to lead it.[1] Kaushik is of the view that a new type of national sentiment emerged in the Gandhi era.[2]

मुख्य शब्द : गाँधी दर्शन, समाजवाद, वर्ग संघर्ष, राष्ट्रीय भावना।

Keywords: Gandhi Philosophy, Socialism, Class Struggle, National Sentiment.

अनुपम मित्र
सहायक प्राध्यापक,
इतिहास विभाग,
राजकीय महाविद्यालय,
रज़ा नगर, स्वार, रामपुर
उ0प्र0, भारत

प्रस्तावना

गाँधी दर्शन का नैतिक आधार समाजवाद के उस अर्थ से भिन्न है जिसमें वर्ग संघर्ष को स्वीकार किया जाता है। इस दृष्टि से यह भी कहा जा सकता है कि गाँधीवाद को समाजवादी चिन्तन से पृथक कर देखना चाहिए। ऐसा प्रतीत होता है कि समाज में जिस प्रकार के समाजवादी विचार विकसित हो रहे थे उनका प्रभाव गाँधी जी के चिन्तन पर भी पड़ा। श्री भारतन कुमारप्पा ने गाँधी की समाजवादी विचारधारा का विश्लेषण करते हुए उनके दर्शन को 'अहिंसक समाजवाद' कहा है।[3]

कांग्रेस में समाजवाद के बढ़े प्रभाव पर महात्मा गाँधी की प्रतिक्रिया भी विचारणीय है। 1934 में पटना में कांग्रेसी समाजवादियों का अखिल भारतीय सम्मेलन हुआ एवं जीवनी लिखते हुए तेंदुलकर गाँधी का यह वाक्य उद्धृत करते हैं कि मैने तो समाजवाद के सिद्धान्त को उस समय ही स्वीकार किया था जब मैं दक्षिण अफ्रीका में था।[4]

गाँधी में एक ओर मार्क्सवाद पर आधारित समाजवाद का विरोध है तो दूसरी ओर वे अपने ढंग को समाजवाद प्रस्तुत करना चाहते हैं। आधुनिक भारतीय समाज विशेषतया कांग्रेस तथा राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन को गांधी के व्यक्तित्व के साथ रख कर देखा जाता है। इसलिए समाजवादी विचारों के अध्ययन में गाँधी को पृथक नहीं किया जा सकता। गाँधीवाद में अपने प्रकार का समाजवादी चिन्तन मौजूद है जिसे हम धीरे–धीरे विकसित होते हुए देख सकते हैं। इसमें संसार की घटनाओं के अतिरिक्त भारतीय राजनीति को बदलती हुई परिस्थितियाँ भी अपना काम करती रही हैं। गाँधी हिंसा से प्राप्त होने वाले समाजवाद से इसलिए भी देश को बचाना चाहते हैं ताकि सारी शक्तियाँ स्वतंत्रता प्राप्ति में लगें । 1920 में गाँधी का नेतृत्व कांग्रेस में स्थापित होता है एवं वे अपने विचारों से कांग्रेस संस्था को एक नवीन रूप देते हैं। अब उसका ध्यान ग्रामों पर केन्द्रित होता है एवं समाज के पिछड़े वर्ग, हरिजन, आदिवासी, किसान, मजदूर आदि की ओर विशेष ध्यान दिया जाता है। 1920 में ही अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस की स्थापना हुई जिसके अध्यक्ष लाला लाजपत राय थे। किसान–मजदूरों की चिन्ता समाजवादी कार्यक्रमों के अंतर्गत आती है। महत्वपूर्ण बात यह है कि भारत में राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम एवं समाजवादी चिन्तन साथ–साथ चले हैं एवं समाजवादी–साम्यवादी सभी विचारधाराओं के लोग आरंभ में कांग्रेस में ही थे, बाद में वे उससे अलग हुए। हम भारत के समाजावादी चिन्तन की विभिन्न शाखाओं पर अलग से विचार कर रहे हैं इसलिए

यहां पर मुख्य रूप से कांग्रेसी कार्यक्रमों के समाजवादी चिन्तन की चर्चा करेंगे जिसका पहला मुख्य आधार महात्मा गाँधी की समाजवादी विचारधारा है। 1927 में लंका में भाषण देते हुए उन्होंने कहा कि 'आप कोष, दरिद्रनारायण के लिए खोल दो'।[5] गाँधी के समाजवादी चिन्तन को लेकर यह भी कहा जाता है कि समाजवाद की भौतिकवादी परिभाषा के अंतर्गत उनके विचार नहीं आते। एक प्रकार से उनकी दृष्टि नैतिक–आध्यात्मिक अधिक है। जहां तक समाजवादी चिन्तन का प्रश्न है गाँधी व नेहरू कांग्रेस संस्था के प्रमुख विचारकों में हैं। यदि हम संक्षेप में उस पृष्ठभूमि पर दृष्टि डालें जिसमें गाँधी का समाजवादी चिन्तन विकसित हुआ है तो बात स्पष्ट हो जाएगी। ब्रिटिश सत्ता ने आरम्भिक उद्योग–व्यवसाय के द्वारा अपने राज्य को भारत में सुगठित किया पर वे यहाँ की अपेक्षा ब्रिटेन का औद्योगीकरण करने में अधिक रूचि लेते थे। परिणाम यह हुआ कि गाँव पिछड़े बने रहे। गाँधी जी ने इसी ग्राम समाज को सामने रखकर अपना समाजादी चिन्तन विकसित किया। वे जानते थे कि ग्रामों का औद्योगीकरण पश्चिम के समान सम्भव नहीं इसलिए उन्होंने घरेलू कुटीर उघोगों पर बल दिया।

गाँधीवादी समाजवादी चिन्तन का मुख्य आधार सत्य–अहिंसा का सिद्धांत है जो गाँधी के चिन्तन की रीढ़ है एवं जिसे उन्होंने व्यवहार में भी प्रयुक्त किया। गाँधी ने सत्य–अहिंसा को अपने जीवन का अंग बनाया तथा समाज को इसी मार्ग पर चलने की शिक्षा दी। गाँधी समाजवादी की स्थापना करना चाहते हैं, पर उन्होंने उसके लिए साधनों की पवित्रता पर विशेष बल देते हुए सत्य–अहिंसा का मार्ग अपनाया है। गाँधी साधन एवं साध्य दोनों की पवित्रता पर बल देते है। इस प्रकार गाँधी साधन एवं साध्य दोनों की पवित्रता पर बल देते है। इस प्रकार गाँधी के समाजवादी चिन्तन में रक्तरंजित क्रांति को महत्व नहीं दिया गया है। सत्य–अहिंसा के द्वारा ही गाँधी ने भारतीय राजनीतिक और सामाजिक व्यवस्था में परिवर्तन का प्रयत्न किया।

गाँधी ने अपने राजनीतिक जीवन के आरंभ में 'हिन्द स्वराज' नाम से एक पुस्तिका लिखी थी जिसमें उन्होंने यह स्वीकार किया है उद्योगपति श्रमिकों का शोषण करते हैं। इन श्रमिकों की स्थिति पशुओं से भी बुरी है एवं उन्हें पूँजीपतियों के लिए बड़े खतरनाक काम करने पड़ते है पर इस पुस्तक में अराजकतावादियों के हिंसात्मक कार्यों का विरोध किया गया है। गाँधी जी कहते हैं कि स्वराज के लिए चरखा चलाओ एवं इस माध्यम से वे सबको स्वावलम्बन का सन्देश देते हैं।[6] गाँधी के समाजवादी चिंतन केवल आदर्श नहीं हैं वरन् उन्होंने इन्हें कार्यरूप देकर समाजवाद की स्थापना का प्रयत्न किया। गाँधी के समाजवादी चिन्तन के विषय में डॉ. पट्टाभि का विचार है।'यदि समाजवाद का उद्देश्य सबको समान सुविधायें देना है तो गाँधीवाद का यह उद्देश्य है कि प्रत्येक मनुष्य अपने समय एवं सुविधाओं का उच्च उद्देश्य की पूर्ति हेतु उपयोग करे।[7]

गाँधी के समाजवादी चिन्तन में ग्रामों के विकास की ओर विशेष ध्यान दिया गया है। वे जानते थे कि भारत एक कृषि प्रधान–देश है एवं यहां की अधिकांश जनता ग्रामों में जीवन निर्वाह करती है तथा कृषि ही उनका जीवन–आधार है। उनका ध्यान ग्रामों की दयनीय स्थिति की ओर गया। उन्होंने समझ लिया कि राष्ट्रीय जागरण के साथ–साथ सामाजिक सुधार अनिवार्य है एवं इस प्रकार सामाजिक कुरीतियों को दूर करने का प्रयास गाँधी के नेतृत्व में कांग्रेस ने किया। गाँधी जी ने भारत के गाँवों के लुप्त प्राय उद्योगों को पुनर्जीवन देने का बीड़ा उठाया तो मानों उन्होंने भारतीय सभ्यता के पुनरूद्धार, भारत की आर्थिक समृद्धि के पुनरागमन एवं भारत की राष्ट्रीय शिक्षा पद्धति की पुर्नरचना का ही बीड़ा उठाया।[8]

गाँधी ने गृह उद्योगों पर बल दिया है। उनका विचार है कि बड़े पैमाने पर औद्योगीकरण करने से देश में बेकारी बढ़ती है क्योंकि मशीनरी सहायता से काम करने से अधिकांश व्यक्ति बेकार हो जाते हैं, देश में गरीबी एवं दरिद्रता आती है जिनके पास धन होता है वह निर्धनों का शोषण करते हैं। गरीब अधिक गरीब एवं अमीर अधिक अमीर होते जाते हैं इससे पूँजीवादी व्यवस्था और मजबूत होती है। नारायण सिंह ने 'मार्क्स और गाँधी का साम्यदर्शन में कहा है–' ग्रामोद्योग कहने से गाँधी जी का अभिप्राय केवल अर्थोपत्ति के उद्योगों से ही नहीं है अपितु उनका उद्देश्य है हर गाँव को यथार्थ स्वराज का अनुभव कराना इसलिए जितना उनका रचनात्मक कार्यक्रम है, उस सबका प्रयोग वे यथाविधि हर गांव में कराना चाहते थे।[9] गाँधी इस बात को भली भाँति जानते थे कि अधिकांश भारतीय जनता गाँवों में निवास करती है एवं वहां सुधार किए बिना समाजवाद कि स्थापना नहीं हो सकती। इस हेतु उन्होंने अपनी आर्थिक नीति का आधार गृह उद्योगों को बनाया। प्रत्येक व्यक्ति को अपने व्यवसाय के अतिरिक्त जीवनयापन के लिए, खाली समय में घरों पर कार्य करना चाहिए जिससे दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति में सहायता मिल सके। गाँधी, पश्चिमी ढंग के अतिरिक्त औद्योगीकरण का विरोध करते है एवं कहते है कि इससे मशीन मनुष्य पर हावी हो जाती है।[10] किन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि मशीन मनुष्य पर गाँधी यंत्रीकरण को किसी प्रकार स्वीकार नहीं करते किन्तु वे उसका गुलाम नहीं बनना चाहते।

गाँधी के समाजवादी चिन्तन का एक महत्वपूर्ण पक्ष सर्वोदय है। इस शब्द का सर्वोत्तम प्रयोग गाँधी ने रस्किन की पुस्तक 'अन टु दि लास्ट' के हिन्दी रूपांतर के लिए 1908 में किया। सर्वोदय का शाब्दिक अर्थ हैः सबका उदय अर्थात् समाज के प्रत्येक व्यक्ति उन्नति तथा विकास। गाँधी के सर्वोदय सिद्धांत ने उन्हें अन्य समाजवादी–मार्क्सवादी विचारकों की तुलना में अधिक मानवतावादी स्थान प्रदान किया है। मानव समाज की उन्नति हेतु छोटे स्वार्थों को त्याग देने का पाठ सर्वोदय देता है। गाँधी का सर्वोदय सिद्धांत मानव समाज का कल्याण चाहता है और यही उसका सामाजिक आदर्श है। निश्चय ही यह गाँधी की, समाजवाद की अपनी कल्पना है जिसके आधार नैतिक हैं।

गाँधी के समाजवादी चिन्तन नैतिक आधार पर हृदय परिवर्तन को महत्व दिया गया है। इस प्रकार गाँधी का समाजवादी चिन्तन मार्क्सवादी यर्थाथवादी चिन्तन की तुलना में आदर्शवादी है। उसमें क्रांति के सहारे आर्थिक

समानता लाने का प्रयत्न नहीं है, वरन् नैतिक दबावों के द्वारा हृदय परिवर्तन की बात की गई है। विद्वान इसे 'मनुष्य की आन्तरिक शक्ति का विकास' कहते है।11 गाँधी ने ट्रस्टीशिप सिद्धान्त की प्रेरणा प्राचीन भारतीय समाज से प्राप्त की है जिसमें कुटुम्ब का मुखिया सब लोगों की देख रेख का भार अपने ऊपर लेता था। सभी सदस्य अपना विश्वास उसे देते थे और इस प्रकार सम्मिलित कुटुम्ब–व्यवस्था पर्याप्त समय तक भारतीय सामाजिक ढांचे का आधार रही है। गाँधी का ट्रस्टीशिप सिद्धान्त नैतिक आधार पर निर्मित है एवं इसमें सम्पत्ति को एक धरोहर के रूप में स्वीकार किया गया है। यहां व्यक्ति को पूँजी कमाने का अधिकार है पर उसके मुक्त उपभोग का नहीं। सम्पत्ति का संग्रह करने वाला उसका स्वामी न बनकर उसका रक्षक बनेगा एवं उसका उपभोग समाज हित में करेगा। [11]

अध्ययन का उददे्श्य

ब्रिटिश सरकार ने भारत में अपने शासनकाल के दौरान भारत के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक ढांचे को बुरी तरह ध्वस्त कर दिया था। अतः भारत का पुनर्निर्माण किया जाना आवश्यक था। भारत की राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों को देखते हुए यहाँ न तो पूँजीवादी व्यवस्था ही कारगर थी और न ही साम्यवादी व्यवस्था। भारत के परिप्रेक्ष्य में समाजवादी व्यवस्था ही सर्वथा उपयुक्त है।

महात्मा गाँधी राष्ट्रीय आन्दोलन, समाजवादी आन्दोलन और चिंतन की दृष्टि से भारत के इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान रखते है और इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि महात्मा गाँधी की आवाज शोषित, पीड़ित और दलित जनता की आवाज थी जिसके लिए उन्होंने आजीवन संघर्ष किया, परन्तु उनकी मृत्यु के पश्चात् समाजवादी दल और समाजवादी आन्दोलन भारत में बिखर से गए और जो कुछ शेष बचा हुआ था, वह उनके विभिन्न अनुयायी जॉर्ज फर्नांडीस, मुलायम सिंह यादव आदि की दलगत राजनीति के फलस्वरूप समाप्त हो गया। ऐसी स्थिति में महात्मा गाँधी और उनका समाजवादी आन्दोलन अपना विशेष स्थान रखता है।

साहित्यावलोकन

मेरे संज्ञान में अभी तक इस विषय पर कोई विशेष शोध कार्य नहीं हुआ है तथा विषय की महत्ता को देखते हुए मेरे विचार से इस विषय का सूक्ष्म, गहन एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन किया जाना अत्यंत आवश्यक है। अतः इस शोधपत्र का यही विषय है।

निष्कर्ष

बल दिया गया है जिससे वह वर्ग–परिचालित होगा जो पूँजी–संग्रह के लिए स्वतंत्र है। गाँधी श्रम के वेतन के स्थान पर रोटी के सिद्धान्त का आग्रह इसीलिए करते हैं कि सबको अपने भरण–पोषण का अधिकार है। दक्षिण अफ्रीका की चर्चा करते हुए वे स्वयं को भी श्रमिक कहते हैं।[12]

अंत टिप्पणी

1. *नेहरू, जवाहर लाल : मेरी कहानी, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली, 1974,पृ075*
2. *कौशिक, पी0ड : द कांग्रेस आइडियालाजी एण्ड प्रोग्राम, आलइड, बम्बई, 1964 पृ035*
3. *गाँधी, एम0 के0 : टुवर्डस नानवायलेन्ट सोशलिज़्म, पृ012*
4. *तेंदुलकर, डी0जी0 : महात्मा, खण्ड 7, बम्बई, 1961, पृ0 476*
5. *वही, खण्ड 2, पृ0 : पृ0385*
6. *रमनमूर्ति, वी0वी0 : गाँधी इसन्शियल राइटिंग्स, गाँधी पीस फाउण्डेशन, नई दिल्ली, 1970, पृ0 316*
7. *उपाध्याय हरिभाऊ : गाँधीवाद–समाजवाद, हिन्दी प्रकाशन मंदिर, इलाहाबाद, 1953, पृ0 78*
8. *सीतारमैया, पट्टाभि–कांग्रेस का इतिहास, खण्ड 1, नई दिल्ली, 1946, पृ0 468*
9. *सिंह, नारायण : मार्क्स और गाँधी का साम्यदर्शन हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद, पृ0 492*
10. *गाँधी : मैन एण्ड मशीन, भा0वि0भ0, 1966 पृ0 24*
11. *राय, क्षितीश : गाँधी मेमोरियल पीस नम्बर, विश्वभारती, शान्ति निकेतन, 1949, पृ0 76*
12. *गाँधी, एम0के0 : कैपिटल एण्ड लेवर, भारतीय विघा भवन, बम्बई, 1970, पृ0 46*